Volume-5, Issue-04, April 2018 ISSN: 2349-7637 (Online) [UGC Listed]

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

युवा असंतोष – एक ज्वलंत मुद्धा

डॉ. राजकुमार सिंह बोलिया

सह–आचार्य, समाजशास्त्र, मा.ला.व.रा. महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

प्रस्तावना :

युवा असंतोष एक विश्वव्यापी घटना और समस्या भी है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव के पुराने विश्वासों एवं आस्थाओं को झकझोरा है। युवा असंतोष को हम बढ़े पैमाने पर युवा या युवाओं में पाये जाने वाले तनाव से लेते है। विकसित देश हो या अल्पविकसित या विकासशील सभी देशों में युवाओं ने परंपराओं के प्रति विद्रोह का झंडा उठाया है। भारतीय समाज भी युवा आक्रोश एवं युवा विद्रोह से अछूता नहीं है। यूं तो हर पीढ़ी के लोग अपनी ही अगली पीढ़ी के आलोचक रहते है, परन्तु वर्तमान समय में भारत के युवाओं की समस्याओं का उचित एवं त्वरित ढ़ंग से समाधान नहीं किया गया तो समाज में स्थिति बद से बदतर होती चली जाएगी। युवा छोटी–छोटी सी घटनाओं से उत्तेजित होकर तोडफोड की कार्यवाही व्यापक पैमाने पर अंजाम दे देते हैं। हम कह सकते हैं युवा असंतोष में युवा दिग्भ्रमित हैं अपने ही राष्ट्र की संपति को नुकसान पहुंचाने का कार्य करते हैं उनके हाथो में कलम न होकर पत्थर होते जा रहे हैं, अपने ही देश को नुकसान पहुंचा रहे है तो एक प्रश्न हमारे जहन में कौंधना उचित ही है कि इसके पीछे वो कौन–कौन से कारण हैं जिसके तहत युवाओं में आक्रोश फैलता जा रहा है। आइए हम व्यवस्थित ढंग से युवा असन्तोष की इस समस्या को समझने का प्रयास करें।

युवा कौन ? और उनमें 'असंतोष क्या है ?'

युवा शब्द हमें एक विशेष आयु समूह का विचार प्रदान करता है । युवा कहा जाने वाला आयु समूह कौनसा है । इस विचार को लेकर विद्वानों ने अलग–2 विचार व्यक्त किये हैं, उनमें मतभेद नजर आता है।

प्रो. वाडिया ने युवाकाल 14 वर्ष से 25 वर्ष के मध्य माना है।

इलियट और मैरिल ने लड़कियों के लिए 12 वर्ष से 22/23 वर्ष तक की आयु और लडकों में यह काल 14 से 15 वर्ष तक का माना है।

युवाओं में सामाजिक दृष्टि से जो विशेषताएं मुख्यतः देखी जाती हैं वो निम्न है–

- परिवार के नियंत्रण से मुक्त होने की चाह ।
- आमोद प्रमोद में समय व्यतीत करने की चाह ।
- खेलकूद में सहभागिता की अभिलाषा
- अपने सम समूहों से सम्मान एवं आदर पाने की चाह
- विपरीत लिंग की नजरों में आकर्षक बनने की चाह
- जिम्मेदारियो से बचने की चाह

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह उम्र सपनों एवं महत्वाकांक्षाओं की उम्र होती है। इस उम्र में आदर्शो के प्रति लगाव एवं उत्साह होता है। युवा इसमें भावात्मक तो हाते हैं परन्तु तर्क की गम्भीरता नहीं दिखायी पड़ती है। इसलिए इलियट और मैरिल ने उचित ही लिखा है ''जैसे रूढ़िवादिता बढ़ी उम्र का लक्ष्ण है, विद्रोह युवा की विशिष्टता है।'' युवाओं को असन्तोष एक सीमा तक प्रेरणा देता है परन्तु यह ''असन्तोष'' एक सीमा के बाद ''समस्या'' या ''खतरा'' भी बन जाता है जब यह सामाजिक मान्यताओं ओर कार्यरत संस्थाओ के लिए बारूद भी बन जाता है। युवा असन्तोष को स्पष्ट एवं ठोस रूप से मापने का कोई मापदण्ड या पैमाना अभी ईजाद नही हुआ है, उनका सही मापन हम नहीं कर सकते हैं। परन्तु उनके द्वारा किये जा रहे आचरण के स्वरूप या उनके द्वारा किये जा रहे व्यवहार के आधार पर उनमें व्याप्त असन्तोष की मात्रा को पहचान सकते है। भारतीय समाज में युवा असन्तोष की समस्या अपने भयावह रूप में विद्यमान है जिसका तत्काल उपचार किया जाना अति आवश्यक है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

कारण :

- प्रायः बचपन से ही बालकों एवं बच्चों में निषेधाज्ञाओं का आक्रमण होने लगता है। अंकुशों पर आधारित समाजीकरण उनमें हीन भावना एवं कुंठा भर देता हे, उनमें आत्म विश्वास की कमी होने लगती है।
- समाज में हमेशा पुरानी एवं नयी पीढ़ी के बीच एक अचेतन संघर्ष चलता रहता है। समाज में कथनी एवं करनी में अंतर भी एक बडा कारण बनता है।
- महिलाओं की उपेक्षा एवं हीन दशा भी इसका कारण होता जा रहा है।
- समाज में सांस्कृतिक मूल्यों में संघर्ष की स्थिति भी एक मुख्य कारण है।
- युवा अवस्था या किशोरावस्था का जल्दी आगमन होने लगा है आजकल के बच्चे इंटरनेट, टी.वी. सोशल मिडिया प्लेटफार्म, शिक्षा आदि के प्रभावों से बड़ी जल्दी युवा और परिपक्व होने लगे हैं।
- विवाह की आयु का बढ़ना, बेरोजगारी, दिखावे एवं प्रतिस्पर्धा पर आधारित जीवन अस्वस्थ, मनोरंजन की संस्थाएँ, अरूचिपूर्ण शिक्षा प्रणाली एवं वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था युवाओ में असंतोष का महत्वपूर्ण कारण है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली जिसमें नीरस पाठ्यक्रम यथार्थ से दूर होने के कारण युवाओं को आकर्षित नहीं करते, शिक्षा के अस्पष्ट उद्देश्यों, रोजगार के लिए न्यूनतम डिग्रियों का निर्धारण होने से पढाई का महत्व कम होने लगा है, परीक्षा प्रणाली पर ढ़ेरों प्रश्नचिन्ह लगे हुये हैं, नकल की आधुनिक सुविधाएं आदि ऐसे अनेकों कारण हैं जिनसे युवाओं का भविष्य अंधकारमय होता जा रहा है। शिक्षा का व्यावसायिकरण, भाई–भतीजा वाद, राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट, माता–पिता दोनों का बच्चों को समय ना देना आदि अनेकों कारण ऐसे है जो कि युवा असंतोष को भड़काने में सहायक सिद्ध हो रहे है। इस संबंध में कारकरिया के विचार महत्वपूर्ण हो जाते हैं कि ''भविष्य ? हमारे भ्रष्टाचार ग्रस्त वि.वि. के भविष्य में क्या धरा है ? उन लाखों विद्यार्थियों के लिए जो इस शरणार्थी शिविर जैसे कॉलेजों से गुजरेगें आने वाला कल कैसा होगा ? कल और कल और कल इस धीमी गति से दिन प्रतिदिन रेंगते चल जायेगें ओर हमारे सभी आन्दोलन प्रतिभावान व्यक्तियों को धूलभरी मृत्यु की और ले जाने और चालाक अवसरवादियों को बहुमूल्य उपलब्धियों की और ले जाने के माध्यम बनेगें।''

आचार्य विनोबा भावे ने भी इस संदर्भ में कहा है कि ''आज विश्वविद्यालयों में सरकार का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है अतः शिक्षण संस्थाओं में राजनैतिक तत्वों का निषेघ कर दिया जाये।''

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की अव्यवहारिकता ने युवाओं में अनिश्चितता एवं संशय का वातावरण बना दिया है। इस संदर्भ में महात्मा गांधी की अंग्रेज शिष्या मिस हेलीमन का कहना है कि ''हम शिक्षा को समस्याओं का समाधान मानते हैं पर आज की शिक्षा स्वयं एक समस्या बन गई है। यह समाधान करने में असमर्थ होती जा रही है आज युवा असन्तोष को समाप्त करने के लिये शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक आधारों पर खडी करनी चाहिए। आज शिक्षा से उसका भविष्य नहीं बनता। चरित्र नहीं बनता।''

निवारण के उपाय :

युवा आक्रोश और असंतोष को सही एवं रचनात्मक दिशा देने के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली को चुस्त दुरूस्त किया जाना अति आवश्यक है। शिक्षा पद्धति में युवक और युवतियों को राज्य की ओर से सुनिश्चित भविष्य की गारंटी दी जानी चाहिए। विश्वविद्यालयों से निकलते ही युवकों को अधिकृत एवं उचित व्यावसायिक मार्गदर्शन एवं सहायता दी जानी चाहिए। सही दिशा मिलने पर युवा शक्ति रचनात्मकता की और अग्रसर होने लगेगी एवं राष्ट्र निर्माण में सहयोगी होगी ।

राष्ट्रीयकृत बैकों एवं उद्योगों का लाभ रोजगार चाहने वाले हरेक युवा को मिलना चाहिए। अनपढ़ या अल्पशिक्षित ग्रामीण युवकों को भूमिहीन होने की दशा में भूमि एवं वित्तीय सहायता देकर गांवो में ही रोजगार एवं खेती में लगाया जा सकता है। युवा पीढी को राजनैतिक स्तर पर भी महत्व मिलना चाहिए।

वर्तमान में बदलते समय की यह मांग भी है कि सरकारी कर्मचारियों की तरह जनसेवकों के लिये भी सेवानिवृति की उम्र निर्धारित हो जिससे युवा पीढ़ी भी नेतृत्व के लिये तैयार हो सके।

जीवन के मूल्य तेजी से बदल रहे है या हम कह सकते हैं कि पुराने मूल्य समाप्त हो रहे है और नये मूल्यों का निर्माण सही तरीके से नहीं हो पा रहा है। बदलाव की इस घड़ी में हमारी युवा शक्ति प्रायः भ्रमित होती दिखाई दे रही है। समाज एवं संस्कृति में विघटन होता दिखाई दे रहा है और मानव सभ्यता को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण युवाओं में प्रवृतियां हिंसक होती जा रही हैं। उनमें अशांति, विध्वंस और विघटन की प्रवृतियां हावी होती जा रही हैं।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

हम कह सकते है कि इन कुछ उपायों को ईमानदारी से अमल में लाने से भी युवा असन्तोष की समस्या को बहुत कुछ सीमा तक नियंत्रित किया जा सकता है। राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भी इसके समाधान के काफी प्रयास किये जा सकते है जिससे हम युवाओं की समस्याओं, कठिनाईयों को धैर्य एवं विवेकपूर्ण तरीके से हल कर पायेगें। व्यवस्थाओं का सही मार्गदर्शन एवं सजगता युवाओं को अनुशासनहीन एवं उद्वण्ड बनने से रोकने में काफी कुछ मददगार हो सकती है।

संदर्भ सूची –

1. M.A. Elliott & F.E. Merrill, Social Disorganization, Harper and Brothers, New York - 1950
2. L.S. Kudehedkar "Youth Welfare in India" in History and Philosophy of Social Work in India Edited by Prof. A.K. Wadia, Bombay: Allied Publishers Pvt. Ltd. - 1961
3. Eliott and Merrill, Social Disorganization, Harper and Brothers, New York - 1950
4. Bachi J. Karkaria, "Corruption in Universities", In the Illustrated Weekly of India Vol. XVIII 42, Oct. 15, 1922

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)